HISTORY

B.A.PART-I (Hons)

Paper-II (The Rise of Modern west)

Unit-IV, (Features Of Mercantilism)

Dr. GUDDY KUMARI

(Guest Lecturer), History Deptt.

A.N.D. College, Samastipur

Lecture Series - 87

वाणिज्यवाद की विशेषताएँ

(FEATURES OF MERCANTALISM)

16 वीं शताब्दी में पूंजीवाद के उत्थान के साथ-साथ वाणिज्यवाद का उत्थान हुआ। वाणिज्यवाद की निम्नलिखित विशेषताएँ थीं-

(1) राज्यों द्वारा व्यापार उद्योग पर नियन्त्रण-

व्यापार तथा उद्योग पर राज्यों का नियन्त्रण वाणिज्यवाद की पहली विशेषता थी। इस प्रकार का नियन्त्रण राज्यों ने मध्य युग में भी श्रेणियों के माध्यम से किया था लेकिन व्यापार या उद्योग की वृद्धि करना इस नियंत्रण का उद्देश्य नहीं था बल्कि शान्ति और व्यवस्था बनाये रखना था। अब इस नियन्त्रण का उद्देश्य बदल गया। अब इसका उद्देश्य व्यापार तथा उद्योग पर इस प्रकार नियन्त्रण स्थापित करना था जिससे राज्य धनी हो। इसके लिए उन्होंने अनेक नियम बनाये। सामूहिक रूप से इन नियमों को ही वाणिज्य व्यवस्था कहा गया है।

(2) सोने तथा चाँदी को वास्तविक धन समझना–

वाणिज्यवाद की दूसरी विशेषता यह थी कि बहुमूल्य धातुओं सोना और चाँदी को ही वास्तविक धन समझा जाता था। अर्थशास्त्रियों की धारणा थी कि वह देश उतना ही धनी होगा जिसके पास जितना सोना और चाँदी होगा। व्यापार और उद्योग का उद्देश्य इसलिये अधिक से अधिक सोना और चाँदी बटोरना था। अर्थशास्त्रियों का कहना था कि राज्य इन बहुमूल्य धातुओं के द्वारा ही शक्तिशाली बनता था। राज्य के व्यापार, उद्योग, कृषि में इन बहुमूल्य धातुओं द्वारा वृद्धि की जा सकती थी और राज्य की रक्षा के लिये राजा सेना का निर्माण कर सकता था। अत: सोना और चाँदी को ही धन और शक्ति का साधन माना जाता था। इसलिये दूसरे देशों को इन बहुमूल्य धातुओं के निर्यात पर पुर्तगाल तथा स्पेन ने प्रतिबन्ध लगा दिया था। इसी कारण यूरोप के दूसरे देश नीदरलैण्ड, फ्रान्स, इंग्लैण्ड तस्करी या लूट के द्वारा इन बहुमूल्य धातुओं को प्राप्त करने का प्रयास करते थे।

(3) व्यापार को प्रमुखता-

वाणिज्यवाद में व्यापार को धन प्राप्त करने का स्रोत माना जाता था। तत्कालीन अर्थशास्त्रियों का मत था कि धन व्यापार में था और प्रत्येक राज्य को अधिक से अधिक व्यापार करना चाहिये ताकि वह अधिक से अधिक धन प्राप्त कर सके। अत: इस युग में व्यापारिक स्पर्द्धा हुई और उपनिवेशों को व्यापार का एक साधन समझा गया। व्यापार का संचालन इस प्रकार होता था कि आयात की अपेक्षा निर्यात अधिक हो। बहुमूल्य धातुएँ सोना और चाँदी इस नीति से राज्य में आयेंगी और राज्य धनी बनेगा।

(4) संरक्षणवाद–

प्रत्येक राज्य का यह प्रयास रहता था कि सोना और चाँदी राज्य से बाहर न जाये। इसलिये वह आयात पर भारी कर लगाता था जिससे कम से कम माल दूसरे देशों से आये। इसके साथ ही जिन वस्तुओं का वह निर्यात नहीं करना चाहता था, उन पर भारी कर लगाता था ताकि उन वस्तुओं का निर्यात न हो सके। अर्थशास्त्र में इस नीति को ही संरक्षणवाद कहा गया है। सामान्यत: स्थल या नौसेना से ऐसी वस्तुएँ सम्बन्धित होती थीं। संरक्षणवाद के कारण प्रत्येक राज्य अपने उपनिवेशों में व्यापार पर एकाधिकार रखता था। वह दूसरे देशों से अपने उपनिवेशों को व्यापार नहीं करने देता था। उसका उद्देश्य अपने उपनिवेशों से अधिक से अधि: लाभ उठाना होता था।

(5) पूँजीवाद का योगदान-

वाणिज्यवाद का उत्थान तथा विकास पूंजीवाद के आधार पर था। जिस देश के पास जितनी अधिक पूंजी होगी, उतना ही ज्यादा उसका व्यापार होगा। वस्तुत: पूँजीवाद को आर्थिक उपनिवेशवाद ने प्रोत्साहन दिया और वाणिज्यवाद को पूंजीवाद ने प्रोत्साहन दिया। इससे अमेरिका, अफ्रीका और एशिया महाद्वीप में यूरोप का व्यापार फैल गया। यह विश्व व्यापार का रूप धारण कर रहा था। पूँजी में इससे वृद्धि हुई और उद्योग का विस्तार हुआ। इस प्रकार बड़े पैमाने पर पूँजी का निर्माण तथा औद्योगिक विकास वाणिज्यवाद की विशेषता थी।

(6) व्यापारिक जहाजों का निर्माण-

बड़े और शक्तिशाली जहाज व्यापारिक वस्तुओं को भारी मात्रा में एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे। तत्कालीन अर्थशास्त्रियों का मत था कि प्रत्येक राज्य को अपना माल अपने जहाजों में ही ले जाना चाहिये तथा अपने ही जहाजों में उपनिवेशों से कच्चा माल लाना चाहिये। अत: विशाल व्यापारिक जहाजों का निर्माण किया। लोगों को नाविक का व्यवसाय पसन्द करने हेतु प्रोत्साहित किया गया। इन व्यापारिक जहाजी बेड़ों के निर्माण ने व्यापार के विस्तार में और अनेक प्रकार की वस्तुओं का आयात-निर्यात करने में विशेष योगदान दिया। राज्य शक्तिशाली जहाजी बेड़े के द्वारा इस व्यापार की सुरक्षा करते थे और राज्य की समृद्धि का कारण व्यापार को ही मानते थे।

कई अर्थशास्त्रियों ने वाणिज्यवाद के आर्थिक विचारों का प्रतिपादन किया था। इंग्लैण्ड का अर्थशास्त्री सर टामस मन (1571-1641 ई.) इनमें प्रसिद्ध है। उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक इंग्लैण्ड ट्रेजर बाय फॉरेन ट्रेड में कम से कम आयात और अधिक से अधिक निर्यात का सिद्धान्त प्रतिपादित किया था। इटली का ऐण्टोनिओ सैता भी इस काल का प्रसिद्ध अर्थशास्त्री था। उसका कहना था कि किसी देश को धनी होने के लिये सोना और चाँदी एकत्रित करना आवश्यक था। उसने उद्योगों पर कृषि की अपेक्षा जोर दिया क्योंकि उद्योगों का लाभ निश्चित तथा वृद्धिशाली होता था।

धन्यवाद